© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 09 , Issue : 04 | October - December 2022

मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में स्त्री–चेतना का विश्लेषण

कुमारी श्वेता आनंद
विषय– हिन्दी
शोध निर्देशक का नाम– डॉ. मीनू , सहायक प्रोफेसर (ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय)

सार

मन्नू भण्डारी अपनी कहानियों में परिवेश को पूरा महत्त्व देती हैं। आस–पास का जीवन, रहन–सहन, प्रकृति का चित्रण उनके शिल्प को प्रामाणिक बनाता है। 'यही सच है' में वह संजय की प्रतीक्षा कर रही दीपा के अंदर चल रहे आंतरिक ऊहा–पोह को व्यक्त करने के लिए पहले उस तरह का माहौल बनाती हैं। कहानी के आरंभ में ही वह लिखती हैं–"सामने आँगन में फैली धूप सिमटकर दीवारों पर चढ़ गई और कंधे पर बस्ता लटठकाए नन्हे –नन्हे बच्चों के झुंड–के–झुंड दिखाई दिए, तो एकाएक ही मुझे समय का आभास हुआ। घंटा भर हो गया यहाँ खड़े–खड़े और संजय का अभी तक पता नहीं! झुँझलाती–सी मैं कमरे में आती हूँ कोने में रखी मेज पर किताबें बिखरी पड़ी हैं, कुछ खुली, कुछ बंद। एक क्षण मैं उन्हें देखती रहती हूँ, फिर निरुद्देश्य–सी कपड़ों की अलमारी खोलकर सरसरी–सी नजर से कपड़े देखती हूँ। सब बिखरे पड़े हैं। इतनी देर यों ही व्यर्थ खड़ी रही इन्हें ही ठीक कर लेती। पर मन नहीं करता और फिर बंद कर देती हूँ।" 'इतना ही नहीं वह इन सारी क्रियाओं को करने के बीच संजय पर गुस्सा भी हो रही है। खुद से ही वार्तानाप की अद्भुत शैली मन्नू भण्डारी के पास है। अक्सर स्वयं से किया संवाद अलाप में बदल जाता है लेकिन यहाँ बड़ी रोचकता से प्रस्तुत हुआ है। दीपा सोचती है– "नहीं आना था तो व्यर्थ ही मुझे समय क्यों दिया? फिर यह कोई आज ही की बात है! हमेशा संजय अपने बताए हुए समय से घंटे–दो घंटे देरी करके आता है और मैं हूँ कि उसी क्षण से प्रतीक्षा करने लगती हूँ। उसके बाद लाख कोशिश करके भी तो किसी काम में अपना मन नहीं लगा पाती। वह क्योंर नहीं समझता कि मेरा समय बहुत अमूल्य है। थीसिस पूरी करने के लिए अब मुझे अपना सारा समय पढ़ाई में ही लगाना चाहिए।

प्रमुख शब्दः– अद्भुत, क्रियाओं और दीवार।

प्रस्तावना

एक अनुशासित बेटी, एक नम्र और विनम्र पत्नी की भूमिका निभाने के लिए बालिकाओं में यह सिखाया जाता है कि जिस पर प्रतिबंध लगाए जाते हैं। रूप की माँ की मृत्यु जल्दी हो जाती है और उसके पिता की दूसरी शादी हो जाती है। लेकिन उसकी सौतेली माँ, आम लोगों की तरह, उसके प्रति बहुत शत्रुतापूर्ण साबित होती है। वह रूप के पिता को रूप के आने वाले युवाओं के प्रति सचेत करती है और उसे अपनी पढ़ाई बंद करने और घर के काम सीखने के लिए कहती है जो अंततः उसके जीवन में गिना जाएगा, न कि पढ़ाई।

एक सामान्य भारतीय व्यवस्था में, एक बेटी को एक बोझ को कम करने के लिए, एक समस्या को हल करने के लिए, एक जिम्मेदारी को दूर करने के लिए और एक ऐसे व्यक्ति के रूप में माना जाता है जिसे जीवन में किसी भी विकल्प का कोई अधिकार नहीं है।

आशा जैसी रूप में बहुत ही कम उम्र में सही और गलत के बीच अंतर करने की समझ है, लेकिन इसे बोलने की न तो हिम्मत है और न ही आवाज। वह अपनी पढ़ाई कभी नहीं छोड़ना चाहती थी लेकिन जब उसकी सौतेली माँ ने इस पर जोर दिया तो विरोध नहीं कर सकती थी। लेकिन आशा की तरह, रूप के पिता भी अपनी बेटी के साथ हुए अन्याय से वाकिफ थे और कहते हैं, "धीरे–धीरे, एक के बाद एक घर की सारी जिम्मेदारियां तारा देवी के कंधों से हटकर रूप पर आ रही हैं और वह भी इन सभी को चुपचाप स्वीकार कर

रही हैं। कुछ ही दिनों में वह विद्यार्थी से गृहस्थ में बदल गई। दोनों कहानियों में पिता को अपनी बेटियों की क्षतिपूर्ति के रूप में दर्शाया गया है, लेकिन सामाजिक और पारंपरिक प्रतिबंधों के कारण वे असहाय हैं। लेकिन एक आदमी होने के नाते वह इसे लंबे समय तक सहन नहीं कर सका और उसे उसकी जानकारी के बिना पढ़ाई के लिए भेजने का फैसला किया।

मन्नू भंडारी की प्रमुख कृतियाँ

स्वामी

'स्वामी' मन्नू भंडारी का भावप्रवण विचारोत्तेजक उपन्यास है। आत्मीय रिश्तो के बीच जिस सघन अंतर्द्वंद का चित्रण करने के लिए मन्नू भंडारी सुपरिचित है, उसका उत्कृष्ट रूप 'स्वामी' में देखा जा सकता है। सोदमिनी, नरेन्द्र और घनश्याम के त्रिकोण में उपन्यास की कथा विकसित हुई है। कथारस के साथ उपन्यास में स्थान पर ऐसे प्रश्न उठाए गए हैं जिनकी वर्तमान में प्रसंगिकता स्वयंसिद्ध है। जैसे, 'जिसे आत्म कहते हैं वह क्या औरतों की देह में नहीं है?

आपका बंटी

आपका बंटी मन्नू भंडारी के उन बेजोड़ उपन्यासों में है जिनके बिना न बीसवीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यास की बात की जा सकती है न स्त्री–विमर्श को सही धरातल पर समझा जा सकता है। तीस वर्ष पहले (1970 में) लिखा गया यह उपन्यास हिन्दी की लोकप्रिय पुस्तकों की पहली पंक्ति में है। दर्जनों संस्करण और अनुवादों का यह सिलसिला आज भी वैसा ही है जैसा धर्मयुग में पहली बार धारावाहिक के रूप से प्रकाशन के दौरान था।

महाभोज

मन्नू भंडारी का महाभोज उपन्यास इस धारणा को तोड़ता है कि महिलाएं या तो घर–परिवार के बारे में लिखती हैं, या अपनी भावनाओं की दुनिया में ही जीती–मरती हैं। महाभोज विद्रोह का राजनैतिक उपन्यास है। जनतंत्र में साधारण जन की जगह कहाँ है? राजनीति और नौकरशाही के सूत्रधारों ने सारे ताने–बाने को इस तरह उलझा दिया है कि वह जनता को फांसने और घोटने का जाल बनकर रह गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

- लघु कथाकार के रूप में मन्नू भंडारी के जीवन और कार्यों का अध्ययन करना।
- मन्नू भंडारी की लघु कथाओं में चित्रित महिला के बारे में अध्ययन करना।
- युवा लड़की के दर्द और युवा महिला की विवाह पूर्व पीड़ा के बारे में अध्ययन करना।
- मन्नू भंडारी के संदर्भ में महिलाओं के बारे में पत्नी और जीवन साथी के रूप में अध्ययन करना।

कार्य योजना और कार्यप्रणाली

यह अध्ययन महिलाओं के चित्रण पर आधारित होगा जिसमें हम सबसे पहले एक लघु कथाकार के रूप में मन्नू भंडारी के जीवन और कार्यों पर चर्चा करेंगे। हम मन्नू भंडारी के संदर्भ में युवा लड़कियों के दर्द और युवा महिलाओं की पति और जीवन साथी के रूप में विवाह पूर्व पीड़ा का भी अध्ययन करेंगे। इस अध्ययन के लिए द्वितीयक आँकड़ों की सहायता से हमारा अध्ययन किया जाएगा अर्थात हमारा अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों पर निर्भर करेगा।

माध्यमिक डेटा वह डेटा है जो पहले से ही प्राथमिक स्रोतों के माध्यम से एकत्र किया गया है और शोधकर्ताओं को अपने स्वयं के शोध के लिए उपयोग करने के लिए आसानी से उपलब्ध कराया गया है। यह एक प्रकार का आकड़ा है जो पहले ही एकत्र किया जा चुका है।

एक शोधकर्ता ने किसी विशेष परियोजना के लिए आकड़ा एकत्र हो सकता है, फिर इसे किसी अन्य शोधकर्ता द्वारा उपयोग करने के लिए उपलब्ध कराया जा सकता है। राष्ट्रीय जनगणना के मामले में बिना किसी विशिष्ट शोध उद्देश्य के सामान्य उपयोग के लिए आंकड़ा भी एकत्र किया जा सकता है।

मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में स्त्री–चेतना

मन्नूजी के व्यक्तित्व की छाया उनके लेखन में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है, वह नारी को उसकी पहचान देती हैं। मन्नू के अनुसार उसके अन्दर अच्छाई भी है, बुराई भी है। वह कोई देवी नहीं है और न ही दानवी है। शायद इसी कारण आज भी उनकी लेखनी में पूरी विश्वसनीयता है। अपनी मौलिकता के कारण उनकी कृ तियाँ दिशा–निर्देशन का कार्य करती हैं। उनका सम्पर्क सभी प्रकार के रचना स्रोतों से बना हुआ है। इनका अन्वेषण यथार्थवादी मूल्यों का है। तीन दशकों से भी अधिक समय तक वे अपने कृतित्व के बल पर हिन्दी महिला साहित्यकारों में अग्रणी बनी रहीं। वे कृष्णा सोबती एवं अमृता प्रीतम के समान अश्लीलता की हद नहीं पार करतीं, यही कारण है कि उनका स्त्री–पुरुष सम्बन्ध–विश्लेषण भी एक सीमा के अन्दर ही होता है।

आधुनिक नारी के दुःखों को मन्नू जी ने भली–भाँति समझा। एक सफल चित्रकार के समान अपने कथा–साहित्य में उन्हें वर्णित और रेखांकित किया। उनकी पात्राएँ सीता के समान देवी नहीं हैं, न ही कलियुगी कलंकिनी हैं वरन् यथार्थ नारी हैं जो सोचती हैं, समझती हैं। वे हाड़–माँस का पुतला हैं, दुःख–सुख वासना–प्रेम सभी भावनाएँ महसूस करती हैं।

उनकी लेखन–शैली पर टिप्पणी करते हुए कवि अजीत कुमार लिखते हैं" उनका लेखकीय व्यक्तित्व किसी विधा में सिमटने, सिकुड़ने, गहराने के स्थान पर विस्तृत और व्यापक होता गया है। उसके आयाम सुलझते जा रहे हैं।

मन्नूजी ने नारी–समस्याओं को चित्रित करने के लिए कहानी, उपन्यास और नाटक आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपनी लेखनी चलाई और प्रत्येक विधा में उनका लेखन अत्यन्त सफल रहा। रूढ़ियों के प्रति विद्रोह उनके लेखन का उजागर पक्ष है। उनकी लेखनी से उपजी नारी एक अस्तित्ववान् सचेतन प्राणी है।

साहित्य लेखन के सन्दर्भ में स्त्री अस्मिता : एक चिंतन

पितृसत्ता एक सामाजिक घटना है, हजारों साल से चली आई ऐसी व्यवस्था है, जिसमें स्त्री की अधीनस्थता सर्वविदित है। पितृसत्ता ने स्त्री को अपने ज्ञान की वस्तु बनाया। उसे साधन के रूप में प्रयुक्त किया – उसके नाम, रूप, जाति, गौत्र सब अपने संदर्भ में परिभाषित किये। स्त्री का यह अमानवीकरण दलित के अमानवीकरण से कहीं ज्यादा सूक्ष्म है, क्योंकि दलित पुरुष अपने दमन से परिचित है। मगर स्त्री चाहे वह किसी भी जाति या वर्ण की हो, अपने उत्पीडन से परिचित ही नहीं है। वह अपनी दैहिकता में कैद है। यह तो इतिहास में पहली बार घट रहा है कि स्त्री पितृसत्ता को नकार रही है, उस सत्ता द्वारा आरोपित भूमिकाओं के प्रति सवाल उठा रही है। वह वस्तु से व्यक्ति बनने की प्रक्रिया में है। उसका जीवन अनंत संभावनाओं से भरपूर है। साठ–पैंसठ साल पहले तक महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर, उनके सशक्तिकरण, उनकी उपलब्धियों और संघर्षों पर, उनके रचे साहित्य और अवधारणाओं पर गंभीरता से चर्चा नहीं की जाती थी। महिला लेखन को बहुत सम्माननीय दर्जा प्राप्त नहीं था और जो दो–चार महिलाएँ रचनाएँ करती भी थीं, उन्हें घर के सीमित दायरे की सीमित समस्याओं के घेरे में रचा लेखन मानकर या घर बैठी सुखी महिलाओं का लेखन मानकर

या तो गंभीरता से नहीं लिया जाता था या एक आरक्षित रियायत दे दी जाती थी कि आखिर तो इनका दायरा छोटा है, परिवेश सीमित है तो बड़े फलक के मुद्दे कैसे उठाएँगी।

भारत के साहित्य इतिहास में महिला साहित्यकारों ने हमेशा से अपने लेखन से महिला शक्ति को एक मजबूत आवाज दी हैं। महादेवी वर्मा से लेकर शिवानी जी और महाश्वेता जी तक महिलाओ ने भारतीय भाषाओ के साहित्य में अभूतपूर्व योगदान दिया हैं और महिलाओ के प्रति समाज की सोच में एक सकारात्मक रवैये के लिए बदलाव पर जोर दिया हैं।

उपसंहार

मन्नू भंडारी ने कहानी और उपन्यास दोनों विधाओं में कलम चलाई। पति, राजेंद्र यादव के साथ लिखा गया उनका उपन्यास 'एक इंच मुस्कान', पढ़े–लिखे और आधुनिकता पसंद लोगों की दुखभरी प्रेमगाथा है। वहीं विवाह टूटने की त्रासदी में घुट रहे एक बच्चे को केंद्रीय विषय बनाकर लिखे गए उनके उपन्यास, 'आपका बंटी' को हिंदी के सफलतम उपन्यासों की कतार में रखा जाता है। जिस संवेदनशीलता और स्नेह से मन्नू जी इस चरित्र और उसके मानसिक जीवन को लिख पाई, वह हिन्दी में दुबारा सम्भव नहीं सका। स्वतंत्रता प्रत्येक व्यक्ति का बुनियादी अधिकार है। आधुनिक युग में इसे एक जीवन–मूल्य के रूप में भी देखा जाता है। सदियो से पराधीन रही नारी की इसी स्वतंत्रता की चाह को नारीवादी आंदोलन की संज्ञा मिली है। अपने आरंभिक काल में इस आंदोलन को पुरूष विरोधी आंदोलन के रूप में देखा गया। परन्तु बाद में यह स्पष्ट हुआ कि यह आंदोलन पुरूष विरोधी आंदोलन न होकर व्यवस्था आंदोलन है जिसके तहत स्त्री का शोषण किया जाता है। यह आंदोलन परिवर्तन की मांग करता है। "परिवर्तन उस व्यवस्था में होना हिए अथवा उस मानसिकता में होना चाहिए जो नारी को गुलाम बनाती है।"

मन्नू भंडारी हिन्दी की वरिष्ठ कहानीकार एवं उपन्यासकार हैं। स्वतंत्रता के बाद वे लिखना शुरू करती हैं। उनका पहला कहानी संग्रह 'मैं हार गई' 1957 में प्रकाशित हुआ। अब तक उनके लगभग दस कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। आज भी उनका लेखन निरंतर जारी है। हाल ही में 'हंस' जुलाई–2012 के अंक में उनकी एक कहानी 'मुक्ति' नाम से प्रकाशित हुई है। मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी के कई रूप चित्रित हुए हैं। इनकी नारियों में कुछ परंपरागत हैं तो कुछ पढ़ी–लिखी, कामकाजी और एक विशिष्ट वर्ग की नारियाँ हैं। ऐसे विशिष्ट वर्ग की नारियाँ अपने अस्तित्व, व्यक्तित्व की रक्षा और प्रतिष्ठा को लेकर सजग हैं।

सन्दर्भ

- कुकांता राधवानी, डॉ. अनीता सिंह (2018) ''मन्नू भंवर की महिला के विवाह में महिला के संघ'' पर, अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, वॉल्यूम, 6 नंबर 5
- डॉ. मुकेश यादव (2017) ''20वीं सदी के भारतीय लघु कहानी लेखकों में जेंडर डिस्कोर्स'', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज सोशल साइंसेज एंड एजुकेशन (आईजेएचएसएसई) वॉल्यूम 4, अंक 10
- प्रीता मणि (2016) पर ''फेमिनिन डिजायर इज ह्यूमन डिजायरः वूमेन राइटिंग फेमिनिज्म इन पोस्ट इंडिपेंडेंस इंडिया'', वॉल्यूम। 26, नहीं।
- अनुराधा शर्मा (2016) पर ''मनु भंडारी की लघु कहानियों में महिलाएंः आंतरिक इच्छाएँ बनाम सामाजिक अपेक्षाएँ'', जे.इंजी.लैंग। लिट एंड ट्रांस. अध्ययन, वॉल्यूम। 3. अंक 4।
- स्टॉर्क–न्यूहाउस, नैन्सी डीन (2021) मन्नू भंडारी द्वारा ''त्रिशंकु और अन्या कहानीयम'' से दो कहानियां। ए ट्रांसलेशन एंड कमेंट्री'', द यूनिवर्सिटी ऑफ एरिजोना।

- ''गोखले, नमिता (2012) राजुल भार्गव में ''जेंडर एंड लिटरेरी सेंसिबिलिटी'' ''इंडियन राइटिंग इन इंग्लिशः द लास्ट डिकेड। जयपुरः रावत पब्लिकेशन्स।